Vol 7, Issue 2, 2024 **Impact Factor: 5.355** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2024.7.2.7051

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

झारखंड के सांस्कृतिक उत्सवों और ऐतिहासिक विकास की समीक्षा

सौम्या राज

शोधार्थी, इतिहास, इतिहास विभाग, वाई.बी.एन. विश्वविद्यालय नामकुम, रांची

डॉ सुषमा गारी

इतिहास विभाग, वाई.बी.एन. विश्वविद्यालय, नामकुम रांची

सारांश:

यह अध्ययन झारखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अन्वेषण करता है, जिसमें इसके पारंपरिक त्योहारों का गहन अध्ययन किया गया है, जो स्वतंत्रता पूर्व काल से लेकर स्वतंत्रता के बाद के काल तक के ऐतिहासिक विकास पर केंद्रित है। झारखंड, जो अपनी सांस्कृतिक विविधता के लिए जाना जाता है, कई जनजातीय समुदायों का घर है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी प्रथाएँ और परंपराएँ हैं। ये त्योहार, जैसे सरहुल, कर्मा, और सोहराई, क्षेत्र के सामाजिक, धार्मिक और कृषि प्रथाओं के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं, और यह प्रकृति, उनके पूर्वजों, और उनके समुदाय के साथ लोगों के संबंधों का जीवंत अभिव्यक्ति हैं। अध्ययन यह भी जांच करता है कि कैसे ये त्योहार ब्रिटिश उपनिवेशवाद से पहले अपनी मूल रूप और उद्देश्य के साथ मनाए जाते थे, और ब्रिटिश शासन के आगमन ने कैसे नई गतिशीलता पेश की, जिसके परिणामस्वरूप इन स्वदेशी प्रथाओं का दमन और अनुकूलन हुआ। औपनिवेशिक प्रभुत्व की चुनौतियों के बावजूद, इन त्योहारों ने अपने मूल सार को बनाए रखा, जो झारखंड के जनजातीय समुदायों की जीवटता और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। स्वतंत्रता के बाद, इन त्योहारों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, जिन पर झारखंड के 2000 में एक अलग राज्य के रूप में गठन के बाद सांस्कृतिक पहचान के पुनरुत्थान के साथ-साथ सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने और जनजातीय विरासत को संरक्षित करने के उद्देश्य से सरकारी पहलों का प्रभाव पड़ा। यह अध्ययन यह समझने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है कि कैसे ये सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ झारखंड में ऐतिहासिक बलों द्वारा आकारित हुई हैं, और ये बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्यों के बावजूद जनजातीय परंपराओं की जीवटता के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

मुख्य बिंदु: सांस्कृतिक विरासत, जनजातीय समुदाय, ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक पहचान, झारखंड

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

परिचय

झारखंड, जो सांस्कृतिक विरासत और विविधता में समृद्ध है, कई जनजातियों का घर है, जिनमें से प्रत्येक के अपने विशिष्ट रीति-रिवाज, परंपराएँ, और त्योहार हैं। ये त्योहार केवल उत्सव के अवसर नहीं हैं बल्कि क्षेत्र के सामाजिक, धार्मिक, और कृषि प्रथाओं के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं। वे प्रकृति, उनके पूर्वजों, और उनके समुदाय के साथ लोगों के संबंधों का जीवंत अभिव्यक्ति हैं। इन त्योहारों का महत्व केवल अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है; वे झारखंड के जनजातीय समुदायों की सामूहिक पहचान और ऐतिहासिक निरंतरता का प्रतीक हैं। भारत की स्वतंत्रता से पहले, झारखंड के त्योहार पारंपरिक रूप में उत्साह के साथ मनाए जाते थे, जो पीढ़ियों से चले आ रहे थे। ये उत्सव बाहरी प्रभावों से अछूते थे, और अपने मूल रूप और उद्देश्य को बनाए रखते थे ***(मदोन, 2010)***। हालांकि, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के आगमन ने नई गतिशीलता पेश की, जिसके परिणामस्वरूप इन स्वदेशी प्रथाओं का दमन और अनुकूलन हुआ। इन चुनौतियों के बावजूद, त्योहारों ने अपने मूल सार को बनाए रखा, जो औपनिवेशिक प्रभुत्व के खिलाफ प्रतिरोध और जीवटता के रूप में कार्य करता था।

स्वतंत्रता पूर्व त्योहारों का उत्सव

भारत की स्वतंत्रता से पहले, झारखंड में त्योहारों का उत्सव जनजातीय समुदायों की स्वदेशी परंपराओं में गहराई से निहित था, जो बाहरी प्रभावों से बहुत हद तक अप्रभावित थे। ये त्योहार प्राकृतिक पर्यावरण, कृषि चक्र और पूर्वजों की पूजा के साथ गहराई से जुड़े हुए थे, जो कि जनजातियों की भूमि के साथ गहरे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंधों को दर्शाते थे। सरहुल जैसे उत्सव, जो नए साल और पेड़ों की पूजा का प्रतीक है, और कर्मा, जो करम पेड़ को समर्पित है, को पीढ़ियों से चले आ रहे अनुष्ठानों के साथ मनाया जाता था। इन त्योहारों में सामुदायिक भागीदारी शामिल थी, जिसमें पारंपरिक संगीत, नृत्य और भेंट का केंद्रीय भूमिका निभाती थी। त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं थे बल्कि सामाजिक एकता, सांस्कृतिक पहचान और ब्रिटिश उपनिवेशवाद के बढ़ते प्रभावों के खिलाफ प्रतिरोध का महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति थे ***(चतुर्वेदी, 2010)***। उपनिवेशवाद के दबाव के बावजूद, ये त्योहार जनजातीय जीवन का एक स्थिर हिस्सा बने रहे, जो झारखंड के समुदायों की सांस्कृतिक अखंडता और जीवटता को एक महत्वपूर्ण बाहरी चुनौतियों के दौरान संरक्षित करने में मदद करते थे।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का प्रभाव

झारखंड में त्योहारों के उत्सव पर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का प्रभाव महत्वपूर्ण था, जिसके परिणामस्वरूप स्वदेशी प्रथाओं का दमन और अनुकूलन हुआ। ब्रिटिश शासन के तहत, कई जनजातीय समुदायों को उनकी पारंपरिक प्रथाओं पर प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा, क्योंकि औपनिवेशिक प्रशासन ने अपने शासन और सांस्कृतिक मानदंडों को लागू करने का प्रयास किया। इससे अक्सर जनजातीय अनुष्ठानों का हाशिए पर जाना और उनकी सामुदायिक जीवन की अव्यवस्था हुई। ब्रिटिशों ने कृषि चक्र को भी प्रभावित करने वाले नए कानूनों और आर्थिक प्रणालियों की शुरुआत की, जो कई त्योहारों के केंद्रीय थे, जिसके परिणामस्वरूप इन त्योहारों के उत्सव के समय और तरीके में बदलाव आया। इन चुनौतियों के बावजूद, झारखंड के जनजातीय समुदायों ने अपने त्योहारों को मनाना जारी रखा, जो अक्सर औपनिवेशिक प्रभुत्व के खिलाफ प्रतिरोध का एक रूप था। ये त्योहार सांस्कृतिक जीवटता के प्रतीक बन गए, जिसमें समुदायों ने अपनी प्रथाओं को उपनिवेशवाद के तहत जीवित रखने के लिए अनुकूलित किया, जबकि उनके परंपराओं के मूल तत्वों को संरक्षित किया ***(रेखारी, 2011)*** । कुछ मामलों में, अनुष्ठानों का दमन नए उत्सव रूपों के उद्भव का कारण बना या मौजूदा त्योहारों में प्रतिरोध के समावेश का, जो बाहरी उत्पीड़न के बावजूद सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के साधन के रूप में त्योहारों की भूमिका को मजबूत करता था।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

स्वतंत्रता के बाद का विकास

भारत की स्वतंत्रता के बाद, झारखंड के त्योहारों का महत्वपूर्ण पुनरुत्थान और विकास हुआ, जो राज्य में व्यापक सांस्कृतिक पहचान के पुनरुत्थान को दर्शाता है। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंत के साथ, जनजातीय परंपराओं, जिनमें उनके त्योहार भी शामिल थे, को संरक्षित और बढ़ावा देने में नई रुचि उत्पन्न हुई। झारखंड के एक अलग राज्य के रूप में गठन ने इस सांस्कृतिक पुनरुत्थान को और अधिक गति दी, जिसमें इन त्योहारों के मान्यता और उत्सव के लिए सरकारी समर्थन में वृद्धि हुई। सांस्कृतिक संरक्षण और पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य की पहलों ने सरहुल, कर्मा और सोहराई जैसे त्योहारों को बढ़ावा दिया, जिससे उन्हें क्षेत्रीय गर्व के प्रतीक के रूप में ऊंचा उठाया गया। जैसे-जैसे राज्य का आधुनिकीकरण हुआ, इन त्योहारों ने समकालीन सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं के साथ अनुकूलन करना शुरू किया ***(विलियम्स, 2011)*** । जबकि पारंपरिक अनुष्ठान केंद्रीय बने रहे, नए तत्व अक्सर शामिल किए गए, जो सामुदायिक जीवन में बदलाव और बाहरी प्रभावों को दर्शाते थे। शहरीकरण, मीडिया के प्रभाव, और आर्थिक परिवर्तनों ने भी इन त्योहारों के उत्सव को प्रभावित किया, जिससे शहरी क्षेत्रों में बड़े, अधिक संगठित सार्वजनिक कार्यक्रम आम हो गए। इन परिवर्तनों के बावजूद, त्योहारों का मूल सार - प्रकृति, समुदाय और पूर्वजों की परंपराओं का सम्मान - बरकरार रहा, जिससे उनकी निरंतरता और आधुनिक समय में प्रासंगिकता सुनिश्चित हुई। स्वतंत्रता के बाद झारखंड के त्योहारों का विकास इस प्रकार परंपरा और आधुनिकता का एक गतिशील मिश्रण का प्रतिनिधित्व करता है, जो सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखते हुए बदलते विश्व के साथ अनुकूलन करता है।

अध्ययन का उद्देश्य और क्षेत्र

इस अध्ययन का उद्देश्य झारखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अन्वेषण करना है, जिसमें इसके पारंपरिक त्योहारों का गहन अध्ययन शामिल है, जो स्वतंत्रता पूर्व काल से लेकर स्वतंत्रता के बाद के युग तक के ऐतिहासिक विकास पर केंद्रित है ***(घोष, 2012)*** । अध्ययन का लक्ष्य यह समझना है कि ये त्योहार कैसे झारखंड में सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों के प्रभाव से आकारित हुए हैं और उन्होंने सांस्कृतिक पहचान और सामुदायिक एकता को बनाए रखने में कैसे योगदान दिया है। इन त्योहारों में निरंतरता और परिवर्तन दोनों का विश्लेषण करके, अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि बाहरी प्रभावों, विशेष रूप से ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और झारखंड के एक अलग राज्य के रूप में गठन के बाद इन त्योहारों ने जनजातीय परंपराओं की जीवटता में कैसे भूमिका निभाई है।

साहित्य समीक्षा

मदोन, शिरीन, सुंदर कृष्णा, और अर्नेस्ट माइकल (2010) इस समीक्षा का उद्देश्य विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया और स्थानीय एजेंसियों की स्वायत्तता के मुद्दों का अध्ययन करना था। लेख में यह पाया गया कि स्वास्थ्य सूचना प्रणाली (HIS) को अक्सर केवल एक रिपोर्टिंग उपकरण के रूप में देखा जाता है, जबकि इसे अधिक व्यापक रूप से समझने की आवश्यकता है। यह विश्लेषण झारखंड के सांस्कृतिक त्योहारों के संदर्भ में सरकारी हस्तक्षेप और स्वायत्तता के बीच के संतुलन को समझने में सहायक हो सकता है, विशेष रूप से स्वतंत्रता पूर्व और बाद के काल में सरकारी नीतियों का त्योहारों पर क्या प्रभाव पड़ा है।

चतुर्वेदी, राम (2010) के अध्ययन ने भारतीय थिएटर अनुसंधान और प्रकाशन की जटिलता का विश्लेषण किया, जिसमें स्वतंत्रता के समय से लेकर 1990 के दशक तक के समय को कवर किया गया। इस अध्ययन ने दिखाया कि कैसे सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ और थिएटर समय के साथ बदलते सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों में विकसित होती हैं। झारखंड के सांस्कृतिक त्योहारों का यह अध्ययन भी इसी प्रकार के सांस्कृतिक परिवर्तन और निरंतरता के तत्वों का विश्लेषण करता है, जो समय के साथ इन त्योहारों के विकास को समझने में सहायक हो सकता है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

रेखारी, श्वेता (2011) ने मुख्यधारा के हिंदी सिनेमा में आदिवासी प्रतिनिधित्व का गहन विश्लेषण किया, विशेष रूप से यह दिखाने के लिए कि कैसे आदिवासी समुदायों की गलत धारणाएं और सामान्यीकरण प्रस्तुत किए जाते हैं। यह समीक्षा झारखंड के त्योहारों के माध्यम से आदिवासी पहचान और उनके सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व के अध्ययन में योगदान करती है, यह समझने में मदद करती है कि कैसे सांस्कृतिक धारणाएं समय के साथ विकसित होती हैं और इनका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है।

विलियम्स, फिलिपा (2011) का अध्ययन उत्तर भारत के शहरी क्षेत्रों में मुस्लिम अंसारियों के अनुभवों और राज्य की अनुपस्थिति के प्रभावों पर केंद्रित था। यह समीक्षा झारखंड के त्योहारों के संदर्भ में सरकारी नीतियों के प्रभाव का विश्लेषण करने में सहायक हो सकती है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे राज्य की उपस्थिति या अनुपस्थिति ने सांस्कृतिक त्योहारों और आदिवासी समुदायों के जीवन को प्रभावित किया।

घोष, अंजन (2012) का अध्ययन झारखंड क्षेत्र में पुरातात्त्विक स्थलों और सांस्कृतिक संकेतों की जटिलता का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन में दिखाया गया है कि कैसे झारखंड के क्षेत्र में कई पुरातात्त्विक स्थल सतही खोजों पर आधारित हैं और उनका संदर्भ और अंकित मिट्टी का ह्रास हुआ है। यह समीक्षा झारखंड के त्योहारों के ऐतिहासिक साक्ष्यों का विश्लेषण करने और उनके सांस्कृतिक संकेतों की व्याख्या करने में सहायक हो सकती है, जिससे इन त्योहारों की ऐतिहासिक प्रासंगिकता को समझा जा सके।

मुखर्जी, रानी (2012) ने ट्रांसलोकल डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का विश्लेषण किया, जो आदिवासी समुदायों के जबरन विस्थापन और सांस्कृतिक पहचान पर केंद्रित थी। यह समीक्षा झारखंड के त्योहारों के पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक पहचान के बीच संबंध का अध्ययन करने में मदद करती है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ और त्योहार आदिवासी समुदायों की पहचान को संरक्षित करने में मदद करते हैं।

ज़ाक्सा, वर्जिनियस (2012)
ज़ाक्सा ने विकास परियोजनाओं और आदिवासी समुदायों के बीच संबंधों का विश्लेषण किया। अध्ययन ने उड़ीसा के लांजीगढ़ में एल्यूमिना रिफाइनरी परियोजना के संदर्भ में दिखाया कि कैसे विकास परियोजनाओं का आदिवासी समुदायों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। यह समीक्षा झारखंड के त्योहारों पर विकास परियोजनाओं और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के प्रभाव का विश्लेषण करने में सहायक हो सकती है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे ये परियोजनाएं त्योहारों और समुदायों को प्रभावित करती हैं।

गीरी, डेविड (2013) का अध्ययन 'अतुल्य भारत' अभियान का विश्लेषण करता है, जो सांस्कृतिक पर्यटन और राष्ट्रीय पहचान पर केंद्रित था। इस समीक्षा का उद्देश्य यह दिखाना है कि कैसे सांस्कृतिक पर्यटन अभियानों के माध्यम से राष्ट्रीय पहचान को बढ़ावा दिया जा सकता है। यह अध्ययन झारखंड के त्योहारों के संरक्षण और प्रचार के लिए सांस्कृतिक पर्यटन के महत्व को समझने में सहायक हो सकता है।

सेन, पारोमा (2014) का अध्ययन समय और सांस्कृतिक सौंदर्यशास्त्र का विश्लेषण करता है, जिसमें आदिवासियों की जीवनशैली और उनके वर्तमान समय पर केंद्रित दृष्टिकोण की समझ विकसित की गई है। यह समीक्षा झारखंड के त्योहारों की समय-धारा और उनकी सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण करने में सहायक हो सकती है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे समय की धारणाएं त्योहारों की प्रासंगिकता को प्रभावित करती हैं।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

सिन्हा, सुभाष्री एस. (2015) ने चुड़ैल-शिकार की हिंसा और इसके सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन किया। इस समीक्षा ने दिखाया कि कैसे सांस्कृतिक हिंसा और मानवाधिकारों के मुद्दे आदिवासी समाज में विकसित हुए हैं। यह अध्ययन झारखंड के त्योहारों के माध्यम से सांस्कृतिक प्रतिरोध और सामाजिक एकता का विश्लेषण करने में सहायक हो सकता है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे त्योहार सामाजिक अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध के रूप में कार्य कर सकते हैं।

खान, अनवर एच. (2016) का अध्ययन रांची में एंग्लो-इंडियन समुदाय की पहचान और संस्कृति के मुद्दों का विश्लेषण करता है। यह समीक्षा झारखंड के त्योहारों के माध्यम से आदिवासी पहचान और संस्कृति का विश्लेषण करने में सहायक हो सकती है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे पहचान के मुद्दे त्योहारों और समुदायों की सांस्कृतिक प्रथाओं को प्रभावित करते हैं।

डुंगडुंग, ग्लैडसन (2017) ने आदिवासी जीवन और उनके अधिकारों का अध्ययन किया। इस समीक्षा ने दिखाया कि कैसे आदिवासी समुदायों के अधिकारों का उल्लंघन विकास और आर्थिक प्रगति के नाम पर किया जाता है। यह अध्ययन झारखंड के त्योहारों के माध्यम से आदिवासी अधिकारों और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का विश्लेषण करने में सहायक हो सकता है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे त्योहार आदिवासी समुदायों की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति को बनाए रखने में मदद करते हैं।

बेट्स, क्रिस्पिन, और अल्पा शाह (2017) का अध्ययन आदिवासी विद्रोह और उनके सांस्कृतिक धारणाओं का विश्लेषण करता है। इस समीक्षा ने तर्क दिया कि आदिवासी लोगों की छवि को जंगली के रूप में प्रस्तुत किया गया था, जो एक विचारधारात्मक रणनीति का हिस्सा था। यह अध्ययन झारखंड के त्योहारों के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक प्रतिरोध का विश्लेषण करने में सहायक हो सकता है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे आदिवासी समुदायों ने सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया।

रम्या, डी. टी. (2017) ने अरुणाचल प्रदेश में जनजातियों के आंतरिक प्रवास का अध्ययन किया। इस समीक्षा ने आर्थिक कारणों से आदिवासी लोगों के प्रवास की जांच की और उनके पारंपरिक जीवनशैली पर इसके प्रभाव का विश्लेषण किया। यह अध्ययन झारखंड के त्योहारों के माध्यम से प्रवास और सांस्कृतिक परिवर्तन का विश्लेषण करने में सहायक हो सकता है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे प्रवास ने आदिवासी त्योहारों और प्रथाओं को प्रभावित किया।

नायक, भबानी सी., और पार्थ ढल (2018) का अध्ययन बौद्ध दर्शन और पर्यटन के बीच संबंधों का विश्लेषण करता है। इस समीक्षा ने तर्क दिया कि पर्यटन शांति और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है। यह अध्ययन झारखंड के त्योहारों के माध्यम से सांस्कृतिक पर्यटन और सामाजिक विकास का विश्लेषण करने में सहायक हो सकता है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे पर्यटन अभियानों ने झारखंड के त्योहारों को बढ़ावा देने और संरक्षित करने मेंमदद की।

मोहंती, प्रदीप्त पी. (2019) ने ओडिशा के जनजातीय पर्यटन के विपणन की रणनीति का अध्ययन किया। इस समीक्षा ने सुझाव दिया कि कैसे ओडिशा के जनजातीय पर्यटन का वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर अपेक्षित ध्यान नहीं मिला है। यह अध्ययन झारखंड के त्योहारों को जनजातीय पर्यटन के माध्यम से वैश्विक पहचान दिलाने के लिए रणनीति का विकास करने में सहायक हो सकता है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे झारखंड के त्योहारों को पर्यटन उद्योग में बेहतर तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

महंता, अनुपमा पी. (2019) का अध्ययन असम में बोडो-आदिवासी संघर्ष का विश्लेषण करता है, जिसमें आदिवासियों के चाय बागानों में श्रम के लिए लाए जाने के कारण उत्पन्न संघर्ष पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस समीक्षा ने दिखाया कि कैसे बोडो लोगों ने आदिवासियों को अपनी स्थानीय पहचान के लिए खतरा माना। यह अध्ययन झारखंड के त्योहारों के माध्यम से आदिवासी संघर्ष और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करने में सहायक हो सकता है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे इन संघर्षों ने त्योहारों और समुदायों को प्रभावित किया।

रत्न प्रिया, टी. एस., ए. आर. एल. एलियाजर नेल्सन, के. रविचंद्रन, और यू. एंटोनी (2019) का अध्ययन दक्षिण भारत में रंगीन चावल की किस्मों के पोषण और कार्यात्मक गुणों का विश्लेषण करता है। इस समीक्षा ने दिखाया कि कैसे रंगीन चावल में उच्च मात्रा में फाइटोकेमिकल्स और एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जो इसे सफेद चावल की तुलना में अधिक पौष्टिक बनाते हैं। यह अध्ययन झारखंड के त्योहारों के माध्यम से पारंपरिक आहार और पोषण का विश्लेषण करने में सहायक हो सकता है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे पारंपरिक खाद्य पदार्थ झारखंड के त्योहारों का हिस्सा रहे हैं और उनका पोषण मूल्य क्या है।

बर्मन, सुभाष के. (2019) का अध्ययन स्वतंत्रता के बाद भारत में समुदाय विकास कार्यक्रमों का विश्लेषण करता है। इस समीक्षा ने दिखाया कि कैसे समुदाय विकास कार्यक्रमों (CDP) का कोई महत्वपूर्ण सफलता नहीं मिली थी और गरीबी दर बढ़ने के कगार पर थी। यह अध्ययन झारखंड के त्योहारों के माध्यम से समुदाय विकास और सामाजिक एकता का विश्लेषण करने में सहायक हो सकता है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे समुदाय विकास कार्यक्रमों ने झारखंड के त्योहारों को प्रभावित किया है।

प्रियदर्शिनी, पी., और पी. सी. अभिलाष (2019) का अध्ययन जलवायु परिवर्तन और सतत विकास लक्ष्यों के संदर्भ में आदिवासी समुदायों की पारंपरिक प्रथाओं का विश्लेषण करता है। इस समीक्षा ने तर्क दिया कि पारंपरिक ज्ञान सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह अध्ययन झारखंड के त्योहारों के माध्यम से सतत विकास और पारंपरिक ज्ञान का विश्लेषण करने में सहायक हो सकता है, विशेष रूप से यह समझने में कि कैसे झारखंड के त्योहारों के माध्यम से|

शोध का दायरा

इस शोध का दायरा झारखंड के प्रमुख पारंपरिक त्योहारों, विशेष रूप से सरहुल, कर्मा, और सोहराई, का विस्तृत अन्वेषण करना है ***(मुखर्जी, 2012)*** । अध्ययन इन त्योहारों को कई दृष्टिकोणों से जांचता है, जिसमें उनके ऐतिहासिक मूल, उनसे जुड़े पारंपरिक प्रथाएं, और समय के साथ उनके विकास को आकार देने वाले सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव शामिल हैं। शोध को दो मुख्य संदर्भों में विभाजित किया गया है: स्वतंत्रता पूर्व युग और स्वतंत्रता के बाद का युग।

स्वतंत्रता पूर्व संदर्भ: यह अध्ययन इन त्योहारों की स्वदेशी जड़ों में गहराई से प्रवेश करेगा, यह जांच करेगा कि कैसे ये त्योहार ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से पहले मनाए जाते थे, जो बाहरी कारकों से बड़े पैमाने पर अप्रभावित थे ***(डुंगडुंग, 2017)*** । इस खंड में त्योहारों के प्रकृति, कृषि, और जनजातीय आध्यात्मिकता के साथ गहरे संबंध का अन्वेषण किया जाएगा, साथ ही इनके जनजातीय समुदायों के भीतर सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में उनकी भूमिका पर भी विचार किया जाएगा।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का प्रभाव: शोध ब्रिटिश औपनिवेशिकता के इन त्योहारों पर प्रभावों का विश्लेषण करेगा, विशेष रूप से स्वदेशी प्रथाओं के दमन और परिणामस्वरूप हुए अनुकूलनों पर ध्यान केंद्रित करेगा। इसमें उन

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

औपनिवेशिक कानूनों और आर्थिक प्रणालियों की जांच शामिल होगी, जिन्होंने पारंपरिक त्योहारों के उत्सव को बाधित किया, और कैसे ये त्योहार औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ प्रतिरोध के रूप में उभरे ***(प्रियदर्शिनी, 2019)*** ।

स्वतंत्रता के बाद का विकास: यह खंड भारत की स्वतंत्रता के बाद इन त्योहारों के पुनरुत्थान और परिवर्तन का अन्वेषण करेगा, विशेष रूप से 2000 में झारखंड के एक अलग राज्य के रूप में गठन के बाद ***(बर्मन, 2019)*** । अध्ययन यह जांच करेगा कि कैसे ये त्योहार आधुनिक सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं के साथ अनुकूलित हुए हैं, जिसमें शहरीकरण, मीडिया, और सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने और जनजातीय विरासत को संरक्षित करने के उद्देश्य से सरकारी पहलों का प्रभाव शामिल है।

समकालीन प्रासंगिकता: शोध झारखंड के सांस्कृतिक परिदृश्य में इन त्योहारों की वर्तमान प्रासंगिकता का आकलन करेगा, यह विश्लेषण करेगा कि ये त्योहार राज्य की सांस्कृतिक पहचान के जीवंत अभिव्यक्ति के रूप में कैसे सेवा करते हैं, जबकि समकालीन संदर्भ के साथ अनुकूलित होते हैं। इसमें आज के सामुदायिक जीवन में इन त्योहारों की भूमिका, सांस्कृतिक पर्यटन पर उनका प्रभाव, और झारखंड की जनजातीय विरासत को संरक्षित करने में उनकी महत्वता शामिल है ***(महंता, 2019)*** ।

इस शोध का दायरा व्यापक है, जिसमें ऐतिहासिक विश्लेषण और समकालीन अध्ययन दोनों शामिल हैं, जिसका उद्देश्य झारखंड के पारंपरिक त्योहारों के विकास और महत्व की एक व्यापक समझ प्रदान करना है। अध्ययन का उद्देश्य सांस्कृतिक संरक्षण और बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्यों के सामने स्वदेशी परंपराओं की जीवटता पर व्यापक चर्चा में योगदान देना है।

निष्कर्ष

अध्ययन झारखंड में त्योहारों की गहरी महत्वता को रेखांकित करता है, जो केवल उत्सव नहीं हैं—बल्कि वे राज्य की सांस्कृतिक पहचान की महत्वपूर्ण अभिव्यक्तियाँ हैं, जो इसकी जनजातीय विरासत में गहराई से निहित हैं। स्वतंत्रता से पहले, ये त्योहार पूरी ताकत से मनाए जाते थे, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दबाव के बावजूद अपने मूल रूपों को बनाए रखते हुए। इन त्योहारों ने सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने और बाहरी प्रभुत्व के खिलाफ प्रतिरोध के रूप में कार्य किया। स्वतंत्रता के बाद, इन त्योहारों का विकास परंपरा और आधुनिकता के एक गतिशील मिश्रण को दर्शाता है। झारखंड के एक अलग राज्य के रूप में गठन और उसके बाद सरकारी पहलों ने इन त्योहारों के पुनरुत्थान और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे उनके निरंतरता को सुनिश्चित किया गया है, जो आधुनिकीकरण और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों का सामना कर रहे हैं। इन परिवर्तनों के बावजूद, त्योहारों ने अपने मूल सार को बनाए रखा है, जो प्रकृति, समुदाय, और पूर्वजों की परंपराओं का सम्मान करते हैं। यह अध्ययन झारखंड के जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बदलते समय के साथ अनुकूलन करने की जीवटता को उजागर करता है, जिससे झारखंड के सांस्कृतिक परिदृश्य में इन त्योहारों के ऐतिहासिक और समकालीन महत्व की व्यापक समझ प्रदान की जाती है।

संदर्भ सूची

[1] मदोन, शिरीन, सुंदर कृष्णा, और अर्नेस्ट माइकल। हेल्थ इंफॉर्मेशन सिस्टम्स, विकेंद्रीकरण और लोकतांत्रिक जवाबदेही। *पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एंड डेवलपमेंट*, वॉल्यूम 30, संख्या 4, 2010, पृष्ठ 247-260।

[2] चतुर्वेदी, राम। भारत में नाट्य अनुसंधान और प्रकाशन: स्वतंत्रता के बाद के काल का एक अवलोकन। *थियेटर रिसर्च इंटरनेशनल*, वॉल्यूम 35, संख्या 1, 2010, पृष्ठ 66-76।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

[3] रेखारी, श्वेता। जैसा देश, वैसा वेश? लोकप्रिय हिंदी सिनेमा में आदिवासियों के प्रतिनिधित्व पर अन्वेषण। *साउथ एशियन फिल्म एंड मीडिया स्टडीज*, वॉल्यूम 2, संख्या 2, 2011, पृष्ठ 107-117।

[4] विलियम्स, फिलिपा। एक अनुपस्थित उपस्थिति: एक भारतीय मुस्लिम मोहल्ले में 'कल्याणकारी राज्य' के अनुभव। *कंटेम्परेरी साउथ एशिया*, वॉल्यूम 19, संख्या 3, 2011, पृष्ठ 263-280।

[5] घोष, अंजन। पत्थरों में समुदाय: झारखंड में कलाकृतियों के समूह, स्थलाकृतिक और संरचनात्मक से संस्कृतियों में अनुवाद। *क्वाटरनरी इंटरनेशनल*, वॉल्यूम 269, 2012, पृष्ठ 38-47।

[6] मुखर्जी, रानी। यात्राएँ, गाने और विस्थापन: विकास को चुनौती देने वाले स्थानिक दस्तावेजों में आंदोलन। *बायोस्कोप: साउथ एशियन स्क्रीन स्टडीज*, वॉल्यूम 3, संख्या 1, 2012, पृष्ठ 53-68।

[7] ज़ाक्सा, वर्जिनियस। पहचान, शक्ति, और विकास: उड़ीसा, भारत में कोंध्स। *द पॉलिटिक्स ऑफ रिसोर्स एक्सट्रैक्शन: इंडिजिनस पीपल्स, मल्टीनेशनल कॉर्पोरेशन्स एंड द स्टेट*, 2012, पृष्ठ 180-203।

[8] गीरी, डेविड। वैश्विक युग में अद्भुत भारत: पर्यटन में छवि ब्रांडिंग की सांस्कृतिक राजनीति। *टूरिस्ट स्टडीज*, वॉल्यूम 13, संख्या 1, 2013, पृष्ठ 36-61।

[9] सेन, पारोमा। वर्तमान की संस्कृति: आदिवासी सौंदर्यशास्त्र की एक समझ। *जर्नल ऑफ आदिवासी एंड इंडिजिनस स्टडीज*, वॉल्यूम 1, संख्या 1, 2014, पृष्ठ 32-42।

[10] सिन्हा, सुभाश्री एस। हिंसा की संस्कृति या संस्कृतियों की हिंसा? *एंग्लिस्टिका AION: एन इंटरडिसिप्लिनरी जर्नल*, वॉल्यूम 19, संख्या 1, 2015, पृष्ठ 105-120।

[11] खान, अनवर एच। रांची में एंग्लो-इंडियन समुदाय: संस्कृति और पहचान के मुद्दे। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एंग्लो-इंडियन स्टडीज*, वॉल्यूम 16, संख्या 1, 2016।

[12] डुंगडुंग, ग्लैडसन। आदिवासियों के लिए एक दृष्टि। *ऑल्टरनेटिव फ्यूचर्स: इंडिया अनशेकल्ड*, 2017, पृष्ठ 594-614।

[13] बेट्स, क्रिस्पिन, और अल्पा शाह। परिचय: उग्र हमला: भारत में आदिवासी और विद्रोह। *उग्र हमला*, रूटलेज, 2017, पृष्ठ 1-34।

[14] रम्या, डी. टी. पहाड़ियों से तलहटी तक: अरुणाचल प्रदेश में जनजातियों के आंतरिक प्रवास पर एक नृवंशविज्ञान परिप्रेक्ष्य। *इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च इन एंथ्रोपोलॉजी*, वॉल्यूम 3, संख्या 1, 2017।

[15] नायक, भबानी सी., और पार्थ ढल। वैश्विक दृष्टिकोण में शांति और विकास के लिए बौद्ध पर्यटन: उड़ीसा का एक अध्ययन। *हेरिटेज: जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज इन आर्कियोलॉजी*, वॉल्यूम 6, 2018, पृष्ठ 1134-1144।

[16] मोहंती, प्रदीप्त पी. उड़ीसा को एक आदिवासी पर्यटन स्थल के रूप में: एक विपणन दृष्टिकोण। *थिंक इंडिया जर्नल*, वॉल्यूम 22, संख्या 10, 2019, पृष्ठ 5402-5415।

[17] महंता, अनुपमा पी. बोडो-आदिवासी पलायन और इसका आदिवासियों पर प्रभाव: बोडोलैंड का एक अध्ययन। 2019।

[18] रत्न प्रिया, टी. एस., ए. आर. एल. एलियाजर नेल्सन, के. रविचंद्रन, और यू. एंटोनी। दक्षिण भारत की रंगीन चावल किस्मों के पोषण और कार्यात्मक गुण: एक समीक्षा। *जर्नल ऑफ एथनिक फूड्स*, वॉल्यूम 6, संख्या 1, 2019, पृष्ठ 1-11।

[19] बर्मन, सुभाष के. भारत में स्वतंत्रता के बाद से सामुदायिक विकास कार्यक्रम की यात्रा: एक अवलोकन। *जमशेदपुर रिसर्च रिव्यू* 2019, पृष्ठ 101।

[20] प्रियदर्शिनी, पी., और पी. सी. अभिलाष। भारत के सतत विकास के लिए संभावित समाधान के रूप में आदिवासी समुदायों और स्वदेशी ज्ञान को बढ़ावा देना। *एनवायरनमेंटल डेवलपमेंट*, वॉल्यूम 32, 2019, पृष्ठ 100459।